कलकत्ता १० जनवरी १९६७.

VII/284

श्री पद्मकान्त जी मालवीय,

जयबाग? ता० २९ का ~~[illegible]~~ पत्र मुझे इसी २ ता० को मिला। मैं २१ सितम्बर से बाहर था वहीं से बीमारी की हालत में ता० ३० दिसम्बर के दिन लौटा। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उत्तर में देर हुई।

विजयलक्ष्मी के मुकाबले अगर तुम्हें सभी पार्टियों का सहयोग हो और टक्कर यदि सीधी हो तो मेरी राय में मालवीय परिवार पर कोई कलंक धब्बा नहीं है इसे सभी जानते हैं। खास कर उस क्षेत्र में तो जानते कि श्रीमती जी पर कितने काले धब्बे नैनी जेल तक के हैं यह सब सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से छिपा नहीं है। फिर भी मामला रुपयों का है। उनके पास पैसा तथा सरकारी मशीन आदि सारी सुविधाएँ हैं। अपने पास से इस चुनाव के लिये रुपये बरबाद करना आज के समय में जब कि कोई गलत काम से अपना धन नहीं आता। तो जो कुछ है उस से काम से कम शान्ति से जीवन बिताना अच्छा है।

चुनाव में खड़े होने के बाद संगठन का भी प्रश्न खड़ा हो जाता है। कौन कितना साथ देगा समय पर यह तो आप के अपने वहां वालों के तालुक की जानकारी आपही को है। इधर पत्रों में पढ़ने में आया कि इन्दिरा के मुकाबले [illegible] खड़ा हो रहा है। हो सकता है कि यह बात [illegible] अपने भी काम आवे अगर रुपयों का पूरा इन्तज़ाम अपने हाथमें हो जाय और कम्यूनिस्ट जनसंघ, पी.एस.पी., तथा सोशलिस्ट पार्टी का सहयोग हो तो एकबार फिर जिस प्रकार पू. मालवीयजी ने मोर्चा लिया था ले लेने में कोई हर्ज नहीं है। कांग्रेस की तो घर की फूट से ही हालत खस्ता है। इन सब बातों को गौर से सोच कर निर्णय करना। मुझे तो तुम्हारे जीतने से पूरी खुशी होगी। चि. पत्र देना। अन्य कार्य हो तो लिखना। पान के मसाले का नुसखा आगामी पत्र के साथ लिखना।

शुभे०
शिवरतन लाल [illegible]

कल डाक्टर से जाँच कराया था ब्लड प्रेशर ८०-६० हो गया हार्ट की गड़बड़ पहिले से भी अधिक है।
इस वास्ते घर से सिर्फ एक डाक्टर के यहाँ पड़ा रहता।

शुभचिन्तक
शिवरतन लाल
पित्ती

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

INDIA 10 P भारत

श्री
पद्मकान्त मालवीय
द्रौपदी घाट
Allahabad

पहला मोड़ First fold

← तीसरा मोड़ Third fold →

दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

पहले यहाँ काटिये To open cut here

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India